

- ## भारतीय सुरक्षा

- भारत के निकटतम पड़ोसी देश सहित राज्य की असफलता के ऐसे उदाहरण मौजूदा परिदृश्य का अभिन्न अंग बन गए हैं और अक्सर सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन जाते हैं।
- अधिकतर पड़ोसी राज्यों में सुरक्षा और राजनीतिक पहलू के निरंतर अस्थिर बने रहने के कारण भारत के निकटतम दक्षिण एशियाई पड़ोसी राष्ट्रों की स्थिति कठिन बनी रहती है।
- सीमा पार आतंकवाद के विरुद्ध संगठित नजरिया अपनाए जाने की जरूरत को मिल रही पहचान के कारण दक्षेस शिखर सम्मेलन का रद्द हो जाना और आतंकवाद मुक्त वातावरण में बैठक आयोजित करने की मांग करना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम था।
- ब्रिक्स-बिम्स्टेक आउटरीच सम्मिट और बीबीआईएन (बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल) जैसे क्षेत्रीय प्रयासों के जरिए बे ऑफ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी-सेक्टरल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक को-ऑपरेशन (बीआईएमएसटीईसी) को प्रोत्साहन महैया कराने

के प्रयास आपसी सहयोग बढ़ाने और आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने की वैकल्पिक संरचना उपलब्ध करा सकते हैं।

- भारत की निरंतर आर्थिक वृद्धि दर बनाए रखने की दक्षिण एशिया के कुछ राज्यों की योग्यता और उनके सामाजिक विकास सूचकों में सुधार अन्य सकारात्मक आयाम हैं जो क्षेत्र में लंबे समय तक स्थिरता के बने रहने के शुभ संकेत देते हैं।
- अफगानिस्तान में सुरक्षा का उत्तरदायित्व अफगान राष्ट्रीय सुरक्षा बलों ने ले लिया और वे सीमित अंतर्राष्ट्रीय युद्धक समर्थन के साथ विद्रोहियों से लड़ने की भयावह चुनौती का सामना कर रहे हैं।
- तालिबान ने वर्ष 2001 में वहां से खदेड़े जाने के बाद अपने उदय के बाद से अब तक सबसे अधिक भू-भाग को अपने कब्जे में ले लिया है और अपने अलग सैन्य एवं राजनीतिक उद्देश्यों को पूरा करने में लगा है।
- पाकिस्तान छद्म युद्धों के रूप में विद्रोही समूहों का उपयोग करके अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश में लगा है।

- ❖ भारत अफगान सुरक्षा बलों को ऐसे प्रशिक्षण देने और क्षमता निर्माण में उनकी मदद करने में अहम भूमिका निभाता रहा है।
- ❖ भारत ने अफगानिस्तान में विकास के लिए अब तक 2 बिलियन अमरीकी डॉलर मुहैया कराए हैं और आगे क्षमता एवं सामर्थ्य निर्माण के लिए एक बिलियन अमरीका डॉलर और देने का वादा किया है।
- ❖ पाकिस्तान में राजनीतिक स्थिति उसके समावेशी और संतुलित आर्थिक विकास के बड़े घाटे के कारण कमजोर बनी हुई है।
- ❖ पाकिस्तान ने अपने सैन्य बलों, विशेषकर परमाणु और मिसाइल क्षमताओं को निरंतर बढ़ाना जारी रखा है। देश क्षेत्रीय-जातिगत संघर्षों से विदीर्ण हो गया है और संघर्ष का क्षेत्र पाकिस्तान-अफगान सीमा के आदिवासी क्षेत्रों से लेकर भीतरी पृष्ठ प्रदेश तक फैला है।
- ❖ यद्यपि सेना ने देश को सुरक्षा की स्थिति को सुधारने के प्रयास किए हैं तथापि इन्होंने पड़ोसियों को निशाना बनाने वाले पाकिस्तानी जिहादियों और आतंकी संगठनों के विरुद्ध कार्रवाई करने से परहेज किया है।
- ❖ पाकिस्तान स्थित भू-भाग से भारत के सैन्य बेसों पर हमला हुए जिसका भारतीय सशस्त्र बलों ने मुंहतोड़ जवाब दिया।
- ❖ हिंद महासागर में भारत की केंद्रीय उपमहाद्वीपीय स्थिति और भू-राजनीतिक परिस्थितियों ने इसे समुद्र में भरोसेमंद बना दिया है।
- ❖ भारत का तेल आयात 80 प्रतिशत तक बढ़ गया है जिसमें लगभग पूरी सामग्री की दुलाई समुद्री मार्ग से ही होती है।
- ❖ भारत के कुल विदेशी व्यापार का लगभग 95 प्रतिशत पानी के जहाजों द्वारा होता है।
- ❖ विश्व के समुद्री कार्गो का तिहाई और लगभग आधे कंटेनर हिंद महासागर से होकर गुजरते हैं। इसलिए वाणिज्य और व्यापार की सुरक्षा भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- ❖ हरमूज और मलक्का जलडमरूमध्यों की अवस्थिति और बहुराष्ट्रीय समुद्री बलों की उपस्थिति ने हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में परिदृश्य को गतिशील बना दिया है।
- ❖ पाक अधिकृत कश्मीर से होकर गुजरने वाली चीन-पाकिस्तान गलियारा (सीपीईसी) भारत की संप्रभुता के लिए एक चुनौती है।
- ❖ दक्षिण चीन सागर एक महत्वपूर्ण समुद्री जलमार्ग है और लगभग 5 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर का व्यापार इस क्षेत्र में इस समुद्री लेन के जरिए होता है।
- ❖ भारत दक्षिण चीन सागर के तटवर्ती देशों के साथ तेल और गैस के क्षेत्रों में सहयोग सहित अन्य कई प्रकार की गतिविधियां करता है।
- ❖ दक्षिण चीन सागर में हाल की गतिविधियों के क्षेत्र की शांति और स्थिरता पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखते हुए

भारत की स्थिति इस मुद्दे पर बिल्कुल दृढ़ है और इसे कई अवसरों पर बहुपक्षीय मंचों पर और द्विपक्षीय रूप से बार-बार दोहराया गया है।

- ❖ भारत यूएनसीएलओएस में यथा परिभाषित अंतर्राष्ट्रीय विधि के सिद्धांतों के आधार पर इस क्षेत्र में नौवहन और उड़ान भरने की स्वतंत्रता और निर्बाध व्यापार एवं वाणिज्य का समर्थन करता है।
- ❖ भारत का यह विश्वास है कि राष्ट्र बिना किसी बल प्रयोग और धमकियों के शांतिपूर्ण प्रयासों के जरिए विवादों का समाधान कर सकता है और उन्हें शांति और स्थिरता को प्रभावित करने वाले विवादों को जटिल बनाने अथवा बढ़ावा देने वाली गतिविधियों में आत्मसंयम बरतना चाहिए।
- ❖ यूएनसीएलओएस का एक पक्षकार राष्ट्र होने के नाते सभी पक्षकारों को यूएनसीएलओएस, जो समुद्र और महासागरों में अंतर्राष्ट्रीय कानून व्यवस्था स्थापित करता है, के प्रति पूर्ण सम्मान रखने की अपील करता है।
- ❖ कोरियाई उपमहाद्वीप में स्थिति गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है।
- ❖ डीपीआरके से आह्वान किया गया है कि इस क्षेत्र में और आगे की शांति और स्थिरता पर विपरीत प्रभाव डालने वाले कार्यों से बचें।
- ❖ भारत नाभिकीय और मिसाइल प्रौद्योगिकियों के ऐसे प्रसार से हमेशा चिंतित रहता है जिससे क्षेत्रीय सुरक्षा परिवेश पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- ❖ भारत, ईरान और रूस मिलकर जिस अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण व्यापार गलियारे का निर्माण करने में लगे हैं उससे इस क्षेत्र में कई प्रकार के आर्थिक और व्यापारिक संपर्क बनेंगे।
- ❖ भारत भी तापी (टीएपीआई) पाइपलान के साथ-साथ संपर्क को बनाए रखते हुए डिजिटल लिंकों जैसी अन्य पहलों में भागीदार रहा है।
- ❖ इस क्षेत्र में भारत का महत्वपूर्ण हित निहित है जो हमारी ऊर्जा जरूरतों के 66 प्रतिशत को पूरा करने के साथ-साथ 80 लाख भारतीयों का निवास स्थान भी है।
- ❖ आर्थिक नजरिए के अतिरिक्त यह क्षेत्र आईएसआईएस जैसे रूढ़ीवादी आतंकी संगठनों के पनपने के कारण भी महत्वपूर्ण बने हुए हैं जो भारत सहित पूरी दुनिया में अपना दबदबा कायम करना चाहते हैं।

### रक्षा मंत्रालय

- ❖ रक्षा मंत्रालय का मुख्य कार्य रक्षा और सुरक्षा संबंधी सभी मामलों में नीति-निर्देश बनाना और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए सेना मुख्यालयों, अंतर-सेवा संगठनों, उत्पादन स्थापनाओं

और अनुसंधान तथा विकास संगठनों को भेजता है।

- ☛ मंत्रालय को यह भी सुनिश्चित करना होता है कि सरकार के नीति-निर्देशों को प्रभावी रूप से कार्यान्वित किया जाए और अनुमोदित कार्यक्रमों का निष्पादन आवंटित संसाधनों के अंतर्गत किया जाए।
- ☛ इन विभागों के प्रमुख कार्य यह इस प्रकार हैं: रक्षा विभाग, एकीकृत रक्षा स्टाफ, तीनों सेनाओं और विभिन्न अंतर सेवा संगठनों से संबंधित कार्य करना।
- ☛ यह विभाग रक्षा बजट, स्थापना मामलों, रक्षा नीति, संसदीय मामलों, अन्य देशों के साथ रक्षा सहयोग और रक्षा संबंधी सभी कार्यकलापों के लिए भी उत्तरदायी है।
- ☛ रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग सैन्य उपस्करों और संभारतंत्र से संबंधित वैज्ञानिक पहलुओं पर सरकार को सलाह देता है और तीनों सेनाओं द्वारा अपेक्षित साजो-सामान के अनुसंधान, डिजाइन और विकास कार्यों के लिए योजनाएं तैयार करता है।

### सेना

- ☛ वैश्विक और क्षेत्रीय भू-राजनीतिक एवं भू-सामरिक मुद्दे भारत के सुरक्षा परिवेश को प्रभावित करते हैं और उसे शक्ति देते हैं।
- ☛ भारतीय सेना देश की सुरक्षा व्यवस्था में प्रमुख भूमिका निभाती है।
- ☛ भारत की सुरक्षा के लिए बाहरी खतरा मुख्य रूप से दो पड़ोसी देशों के साथ क्षेत्र और सीमा को लेकर विवाद के कारण पैदा होता है।
- ☛ भारतीय सेना देश की क्षेत्रीय अखंडता को सुरक्षित रखने के लिए राष्ट्रीय सीमाओं के कठोर इलाकों और मौसम का सामना करते हुए हर समय प्रतिबद्ध रहती है।
- ☛ छद्म युद्ध और उपद्रव के रूप में झड़पें होती रहती हैं। भारतीय सेना अन्य सुरक्षा एजेंसियों के साथ मिलकर आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियों से सुरक्षा एजेंसियों के साथ मिलकर हमेशा आगे रहती है।
- ☛ भारतीय सेना रेत के टीलों, मिट्टी और जल के संरक्षण में भी अपना योगदान देती है इतना ही नहीं, भारतीय सेना की प्रशिक्षण टीमों विश्व के 10 देशों में उनकी सेनाओं को प्रशिक्षण देने और सेनाएं तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही हैं।
- ☛ थलसेना का आधुनिकीकरण पाँच उप-व्यवस्थाओं यानी घातक शक्ति, बचे रहने की योग्यता, गतिशीलता, स्थिति के प्रति जागरूकता और टिके रहने की क्षमता के आधार पर किया जा रहा है।
- ☛ लंबी दूरी तक आग्नेय मारक क्षमता बढ़ाने के लिए सेना की आर्टिलेरी (तोपखाने) में कई तरह की तोपों को शामिल किया जा रहा है।

- ☛ आर्टिलेरी की क्षमता को बढ़ाकर लक्ष्यभेदी बनाया जा रहा है और उसे विकसित करने के लिए प्रमुख तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है आर्मी एविएशन (सेना उड़्डयन) टोह लेने, निगरानी करने, तोपों की गोलाबारी की दिशा बताने, सैनिक बलों को सहयोग देने और हताहतों को युद्धक्षेत्र से निकालने के मामले में चतुर्थ आयामी युद्ध सहयोग मुहैया कराता है।

### नौसेना

- ☛ नौसेना का उद्देश्य वैध प्रयोजन के लिए राष्ट्र की सीमा में आने वाले समुद्र के इस्तेमाल को सुरक्षित बनाना है, साथ ही दूसरों द्वारा उसके समुद्र के शत्रुतापूर्ण इस्तेमाल के विरुद्ध रक्षा करना है।
- ☛ नौसेना का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत है जिसमें एक तरफ शत्रु से घनघोर युद्ध करना तो दूसरी तरफ मानवीय सहायता करना और प्राकृतिक विपदा के समय राहत पहुँचाने का कार्य करना शामिल है।
- ☛ उसके इस विस्तृत कार्यक्षेत्र को विशेष जरूरतों के अनुसार अलग-अलग भूमिकाओं में बांटा जा सकता है।
- ☛ अपनी विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए भारतीय नौसेना देश की समुद्री संप्रभुता और समुद्री गतिविधियों के व्यापक इस्तेमाल के प्रमुख गारंटर और रक्षक के तौर पर कार्य करती है।
- ☛ भारतीय नौसेना की मुख्य भूमिकाएं हैं- सैन्य, कूटनीतिक, सिपाहियों के दस्ते और सौम्यतापूर्ण व्यवहार।
- ☛ भारतीय नौसेना का मुख्य सैन्य उद्देश्य देश की विरुद्ध किसी भी सैन्य दुस्साहस, जिसमें भारत के मामलों और राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध विध्वंसकारी रणनीतियां शामिल हैं, को रोकना है और हमला होने की स्थिति में दुश्मन को धूल चटाना है।
- ☛ नौसेना द्वारा प्रतिरोध के उपायों और तरीकों में दुश्मन को रोकना और उसे दंडित करना दोनों ही उपायों से परंपरागत प्रतिरोध शामिल है।
- ☛ इसके लिए वह सुदृढ़ सैनिक क्षमता रखती है और संभावित दुश्मन को यह एहसास दिलाती है कि भारत के राष्ट्रीय हितों विरुद्ध उसने इसी तरह का दुस्साहस किया तो उसे इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है।
- ☛ भारत में एक लंबा समुद्र तट और ढेरों द्वीप हैं, एक विशाल समुद्री इलाका, समुद्र तटीय क्षेत्र में ऊर्जा की अवसंरचनाएं और अन्य महत्वपूर्ण संपत्तियाँ हैं, इसके अलावा बड़ी जनसंख्या है, जिसका एक बड़ा हिस्सा समुद्र तटीय इलाकों में रहता है।
- ☛ चूँकि समुद्र में कोई भौतिक अवरोध नहीं होते हैं, इसलिए इन क्षेत्रों और संपत्तियों की सुरक्षा समुद्र के रास्ते होने वाले खतरों के प्रति बहुत संवेदनशील या नाजुक होती है।
- ☛ इसलिए भारतीय नौसेना की सैन्य भूमिका में अपनी सुरक्षा को

मजबूत बनाना उसका मुख्य उद्देश्य होता है।

- ☛ भारतीय नौसेना को समुद्री क्षेत्र की सुरक्षा शामिल है। हालाँकि पारंपरिक समुद्री सुरक्षा के खतरे का सामना करना भारतीय नौसेना का मुख्य उद्देश्य बना रहेगा, लेकिन हाल के वर्षों में गैर-पारंपरिक खतरों की वृद्धि को देखते हुए समुद्री सुरक्षा में नए सिरे से विकास को अनिवार्य बना दिया है। पारंपरिक चुनौतियों की रेखाएं धुंधली होने के साथ गैर-पारंपरिक खतरों में, घटनाओं और उसके स्तर के मामले में तेजी से वृद्धि हुई है।
- ☛ इन गैर-पारंपरिक खतरों को पारंपरिक प्रतिष्ठानों से सहयोग, समर्थन और प्रायोजन मिलता है।
- ☛ भारत एक समुद्री राष्ट्र है और इसकी अर्थव्यवस्था व्यापार के लिए महत्वपूर्ण रूप से समुद्र पर निर्भर है।
- ☛ भारतीय नौसेना महाद (महाराष्ट्र) के निकट सावित्री नदी पर पुल गिरने की दुर्घटना के दौरान सहायता पहुँचा चुकी है और अंडमान एवं निकोबार द्वीपों में हैडलॉक एवं नील द्वीपों पर फंसे पर्यटकों को बाहर निकालने में भी मदद कर चुकी है।
- ☛ भारतीय नौसेना आइओआर में नियमित रूप से एचएडीआर संचालन में अपना योगदान देती रही है।

### वायुसेना

- ☛ आइएएफ ने हमेशा से ही स्वदेशी रक्षा उत्पादन योग्यता और क्षमता के विकास को बढ़ावा दिया है।
- ☛ स्वदेशी रूप से निर्मित प्लेटफॉर्म तैयार करने और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने की इसकी कोशिश के चलते आइएएफ की विभिन्न प्रणालियों महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।
- ☛ डिफेंस प्रोक्वोरमेंट प्रोसीजर 2016 में, मेक एंड बाइ (इंडियन इंडीजेनसली डिजाइंड एंड डेवलप्ट मैन्युफैक्चर (आइडीडीएम) श्रेणियों को सबसे अधिक प्राथमिकता दी गई है।
- ☛ एलसीए एमके-1ए, लाइट कम्बैट हेलिकॉप्टर (एलसीएच), एडल्यूएसीएस (भारत) और हाइ फ्रीक्वेंसी रेडियो सेट जैसे कुछ उदाहरण हैं जो आइडीडीएम रूट के जरिए तैयार किए जा रहे हैं।
- ☛ 'फर्स्ट रेस्पॉन्स' के तौर पर आइएएफ ने प्राकृतिक आपदा, दुर्घटना या देश या विदेश में आपातकालीन मौकों पर खुद को साबित किया है।
- ☛ घरेलू मोर्चे पर अगस्त 2016 में राजस्थान, उत्तर प्रदेश एवं बिहार और जुलाई 2017 में गुजरात व राजस्थान में बाढ़ के समय आइएएफ ने पूरी तत्परता के साथ राहत पहुँचाने का काम किया।
- ☛ आइएएफ ने जरूरत पड़ने पर तेजी से नागरिक स्थानीय प्रशासनों की भी सहायता की है जैसे कि सितंबर 2016 में श्रीनगर में

विरोध प्रदर्शनों के दौरान, दिसंबर 2016 में तमिलनाडु की मुख्यमंत्री के निधन के बाद, दिसंबर 2016-जनवरी 2017 में इफाल में कानून-व्यवस्था की समस्या के दौरान, अप्रैल 2017 में श्रीनगर के उपचुनाव के दौरान, और जुलाई 2017 में जम्मू-कश्मीर में अमरनाथ यात्रियों पर आतंकी हमले के दौरान सहायता की थी।

- ☛ तीन फ्लाइट कैडेटों-अवनि चतुर्वेदी, भावना कांत और मोहना सिंह ने तेलंगाना के दुंडीगल में आइएएफ एकेडमी से पास होकर निकलने के बाद फाइटर स्ट्रीम में कमीशन पाने वाली पहली भारतीय महिला पायलट बनकर इतिहास रच दिया।
- ☛ उन्हें पिलाटस पीसी-7 एमके और किरन विमान में प्रशिक्षण दिया गया था। इस समय वे हॉक एमके-132 एडवांस जेट विमान पर ट्रेनिंग ले रही हैं।
- ☛ जून 2017 में तीन अन्य महिला कैडेटों को फाइटर स्ट्रीम में चुना गया है।

### कमीशन प्राप्त रैंक

- ☛ तीनों सेनाओं में कमीशन-प्राप्त रैंक इस प्रकार हैं-प्रत्येक रैंक को दूसरी सेना में उसके समान रैंक के सामने दिखाया गया है।

थलसेना	नौसेना	वायुसेना
जनरल	एडमिरल	एयरचीफ मार्शल
लेफ्टिनेंट जनरल	वाइस एडमिरल	एयर मार्शल
मेजर जनरल	रियर एडमिरल	एयर वाइस मार्शल
ब्रिगेडियर	कमोडोर	एयर कमोडोर
कर्नल	कैप्टन	ग्रुप कैप्टन
लेफ्टिनेंट कर्नल	कमांडर	विंग कमांडर
मेजर	लेफ्टिनेंट कमांडर	स्क्वाड्रन लीडर
कैप्टन	लेफ्टिनेंट	फ्लाइट लेफ्टिनेंट
लेफ्टिनेंट	सब-लेफ्टिनेंट	फ्लाईंग ऑफिसर

### भारतीय तटरक्षक

- ☛ भारतीय तटरक्षक की स्थापना निम्नलिखित कर्तव्यों के उद्देश्य के साथ 1977 में की गई थी: कृत्रिम द्वीपों की सुरक्षा एवं बचाव, समुद्र में टर्मिनल और अधिष्ठापन; मछुआरों की सुरक्षा जिसमें समुद्र में संकट के समय उनकी सहायता करना शामिल है; समुद्री पर्यावरण की रक्षा करना और समुद्री प्रदूषण को नियंत्रित करना और रोकना; तस्करी रोकने के अभियानों में कस्टम और अन्य विभागों की सहायता करना; समुद्र में जीवन व संपत्ति की सुरक्षा और वैज्ञानिक डेटा का संग्रह करना; समुद्री क्षेत्र में विभिन्न कानूनों के प्रावधानों को लागू करना।

### भारतीय सैन्य अकादमी, (आईएमए)

- भारतीय सैन्य अकादमी में प्रविष्टि के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं-एनडीए से स्नातक होने पर; सेना कैडेट कॉलेज से, जो आईएमए का ही एक विंग है, स्नातक होने पर; सीधी भर्ती स्नातक कैडेट, जो संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण करके सैन्य चयन बोर्ड द्वारा चुने जाते हैं; तकनीकी पाठ्यक्रम (टीजीस) के लिए; इंजीनियरिंग कॉलेजों के अंतिम/अंतिम से पूर्व वर्ष के छात्रों के लिए विश्वविद्यालय प्रविष्टि योजना (यूईएस) के अंतर्गत।
- आईएमए मित्र देशों के जेंटलमैन कैडेटों को भी प्रशिक्षण प्रदान करता है।

### अफसर प्रशिक्षण स्कूल (ओटीएस)

- वर्ष 1963 में स्थापित अफसर प्रशिक्षण स्कूल (ओटीएस) के 25 वर्ष पूरे होने पर 1988 से इसे अफसर प्रशिक्षण अकादमी (ओटीए) का नाम दिया गया।
- वर्ष 1965 से पहले इसका मुख्य कार्य इमरजेंसी कमीशन प्रदान करने के लिए जेंटलमैन कैडेटों को प्रशिक्षित करना था।
- 1965 के बाद अकादमी ने अल्प सेवा कमीशन के लिए कैडेटों को प्रशिक्षित करना आरंभ किया।
- 1992 से सेना में महिला अफसरों के प्रवेश के पश्चात ओटीए से हर वर्ष लगभग 100 महिला अफसर सेना सर्विस कोर, सेना शिक्षा कोर, जज एडवोकेट जनरल विभाग, इंजीनियर्स कोर, सिग्नल तथा इलेक्ट्रिकल एवं मेकेनिकल कोर में कमीशन प्राप्त करती हैं।

### अफसर प्रशिक्षण अकादमी

- अफसर प्रशिक्षण अकादमी 2011 में शुरू हुई थी। फिलहाल इसकी प्रशिक्षण क्षमता 400 जेंटलमैन कैडेटों की है। उत्तरोत्तर यह क्षमता बढ़ाकर 750 जेंटलमैन कैडेट की जाएगी।
- ओटीए, गया निम्नलिखित के लिए प्रशिक्षण प्रदान करता है: 10+2 तकनीकी प्रवेश योजना; विशेष कमीशन प्राप्त अफसर। ओटीए, गया मित्र देशों के जेंटलमैन कैडेटों को भी प्रशिक्षण प्रदान करता है।

### राष्ट्रीय कैडेट कोर

- राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) की स्थापना 1948 में हुई थी। इसने अपनी स्थापना के 69 वर्ष पूरे कर लिए हैं।
- एनसीसी युवाओं में प्रतिबद्धता, समर्पण, अनुशासन, नैतिक मूल्यों को मजबूत करके, देश की चुनौतियों का सामना करने के लिए हर तरह से विकास का प्रयत्न करता है, जिससे वे

सफल नागरिक बन सकें। एनसीसी का उद्देश्य है 'एकता और अनुशासन'। एनसीसी कैडेटों की कुल स्वीकृत संख्या 15 लाख है।

- इसमें वर्ष 2010 में दो लाख कैडेटों की स्वीकृत संख्या शामिल है। इसके अधीन प्रतिवर्ष 40,000 कैडेटों को पाँच चरणों में शामिल किया जा रहा है। एनसीसी 16,288 संस्थानों के साथ देश के 716 में 703 जिलों में मौजूद है।

### सैनिक स्कूल

- सैनिक स्कूलों को केंद्रीय और राज्य सरकारों के संयुक्त उद्यम के रूप में स्थापित किया गया था। ये सैनिक स्कूल सोसायटी के अधीन कार्य करते हैं। वर्तमान में देश में विभिन्न हिस्सों में 26 सैनिक स्कूल अवस्थित हैं।
- सैनिक स्कूलों के उद्देश्यों में आम आदमी तक ऊँची पब्लिक स्कूल शिक्षा की पहुँच बनाना, बच्चे के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना एवं सशस्त्र सेनाओं के अधिकारी संवर्ग में क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करना शामिल है।
- सैनिक स्कूलों के कारण राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी में पहुँचने वाले कैडेटों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है जिसे ध्यान में रखते हुए सैनिक स्कूल लड़कों को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की मार्फत सशस्त्र सेनाओं में शामिल होने के लिए शैक्षिक, शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार करते हैं।

### राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल

- देश में पाँच मिलिट्री स्कूल कर्नाटक के बंगलुरु व बेलगाम, हिमाचल प्रदेश के चैल और राजस्थान के अजमेर व धौलपुर में हैं।
- ये स्कूल सीबीएसई से मान्यता प्राप्त तथा पूर्ण रूप से आवासीय स्कूल हैं जो रक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में कार्य करते हैं।
- कॉमन एंट्रेंस टेस्ट के परिणामों के आधार पर लड़कों की छठी और नवीं कक्षा में भर्ती होती है।
- सेना, नौसेना और वायुसेना के जेसीओ/ओआर (पूर्व सैनिकों सहित) के आश्रितों के लिए 70 प्रतिशत सीटें आरक्षित होती हैं और शेष 30 प्रतिशत सीटें सेना, नौसेना और वायुसेना के अफसरों तथा नागरिकों के आश्रितों के लिए आरक्षित रहती हैं।

### राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कॉलेज

- भारतीय सशस्त्र बल में अधिकारी बनने के इच्छुक तथा भारत में जन्में या रहने वाले लड़कों को आवश्यक प्राथमिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कॉलेज (आरआईएमसी) की वर्ष 1922 में स्थापना की गई थी।
- यह संस्थान आज राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के सहयोग संस्थान के रूप में काम कर रहा है।

### कॉलेज ऑफ मिलिट्री इंजीनियरिंग

- ☛ पुणे स्थित कॉलेज ऑफ मिलिट्री इंजीनियरिंग एक प्रमुख तकनीकी संस्थान है। यहाँ इंजीनियरिंग कोर, अन्य सशस्त्र सेवाओं, नौसेना, वायुसेना, अर्द्धसैनिक बल, पुलिस तथा सिविलियन को प्रशिक्षण दिया जाता है।
- ☛ इसके अलावा, मित्र राष्ट्रों के कर्मियों को भी यहाँ प्रशिक्षण दिया जाता है।
- ☛ सीएमई जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) से बी.टेक और एम.टेक डिग्री प्रदान करने के लिए मान्यताप्राप्त है।
- ☛ अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् भी सीएमई द्वारा चलाए जा रहे स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों को मान्यता प्रदान करता है।

### रक्षा उपक्रम

- ☐ हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड: वर्ष 1940 में स्थापित हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) एशिया कि प्रमुख अग्रणी एयरोनॉटिकल कंपनी है।
- ☐ एचएएल एक नवरत्न कंपनी है, जिसके पूरे देश में नौ भौगोलिक क्षेत्रों में 20 उत्पादन डिबीजन और 11 अनुसंधान एवं विकास केंद्र हैं।
- ☐ एचएएल के विशेषज्ञता में विमानों, हेलिकॉप्टरों, एयरो-इंजनों, सहायक सामग्रियों, वैमानिकी और प्रणालियों के डिजाइन और विकास, उत्पादन, मरम्मत, ओवरहॉल तथा उन्नयन शामिल हैं।
- ☐ एचएएल द्वारा उपलब्ध कराए गए सभी बेड़ों के लिए और ओईएम ने जिन बेड़ों के सहायता देना बंद कर दिया है, जैसे कि एचएच-748, चीता/चेतक आदि, उन बेड़ों के लिए भी एचएएल भारतीय रक्षा सेवाओं को अनुरक्षण सहायता प्रदान कर रहा है।
- ☐ यह कंपनी गैर-एचएएल उत्पादित विमानों और इंजनों के लिए भी सहायता प्रदान करती है जैसे कि मिराज 200, एन-32, सी किंग हेलिकॉप्टर मॉड्यूल, जीनोम इंजन, टीएम-333 2बी2 इंजन आदि।
- ☐ एचएएल भारती सेना और तटरक्षक बल के 100 प्रतिशत बेड़ों के अनुरक्षण सहायता देता है और भारतीय वायुसेना और भारतीय नौसेना के संबंध में यह सहायता क्रमशः 75 प्रतिशत और 61 प्रतिशत है।
- ☐ एचएएल ने भारतीय रक्षा सेवाओं की विमानन आवश्यकताओं, जैसे- प्रशिक्षक, लड़ाकू, परिवहन विमान और हल्के हेलिकॉप्टर, के लिए खुद को एक व्यापक समाधान प्रदाता के रूप में स्थापित किया है।

- ☐ भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड: रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के नवरत्न भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड की स्थापना 1954 में हुई थी।
- ☐ देशभर में बीईएल की नौ विनिर्माण इकाइयां हैं। कंपनी की मुख्य क्षमता रक्षा संचार रडार और मिसाइल सिस्टम, सोनार एवं फायर कंट्रोल सिस्टम, इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर, वॉरफेयर एवं वैमानिकी सिस्टम, नेटवर्क केंद्रिक सिस्टम, इलेक्ट्रो-ऑप्टिक्स, टैंक इलेक्ट्रॉनिक्स, होम लैंड सिक्वोरिटी आदि के क्षेत्रों में हैं।
- ☐ कंपनी का तकरीबन 88 प्रतिशत टर्नओवर इन्हीं व्यावसायिक क्षेत्रों से आता है।
- ☐ गैर-रक्षा क्षेत्र में बीईएल इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम), टैबलेट पीसी (बीईएल द्वारा डिजाइन किए हुए), डॉपलर वेदर रडार, विभिन्न प्रकार के संघटक जैसे एकीकृत सर्किट, हाइब्रिक माइक्रो सर्किट, सेमीकंडक्टर डिवाइस, सोलर सैल आदि का निर्माण करता है।
- ☐ इनके अलावा, बीईएल की मौजूदगी एक्ससे कंट्रोल सिस्टम और चुनिंदा गैर-रक्षा अनुप्रयोगों में भी है।
- ☐ बीईएमएल लिमिटेड: 1964 में स्थापित बीईएमएल लिमिटेड रक्षा मंत्रालय के अधीन एक मिनी रत्न (श्रेणी-1) सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है।
- ☐ यह कोयला, खनन, इस्पात, सीमेंट, विद्युत, सिंचाई, निर्माण, सड़क निर्माण, रक्षा, रेलवे, मेट्रो परिवहन प्रणाली और एयरोस्पेस जैसे अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिए उत्पादों की व्यापक श्रृंखला के डिजाइन, विकास, निर्माण और बिक्री के बाद सेवा में लगा हुआ है।
- ☐ बीईएमएल तीन व्यावसायिक श्रेणियों में कार्य करता है- खनन व निर्माण, रक्षा व एयरोस्पेस, रेल व मेट्रो तथा निर्यात गतिविधियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रभाग।
- ☐ भारत डायनेमिक्स लिमिटेड: मिनीरत्न श्रेणी-1 की कंपनी भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (बीडीएल) का गठन रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत 1970 में किया गया था।
- ☐ एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइलों (एटीजीएम) के निर्माण में अग्रणी बीडीएल और नवीनतम पीढ़ी के एटीजीएम का निर्माण करने वाली समेकित कंपनी का रूप ले चुकी है और सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल सिस्टम, सामरिक हथियार, लांचर, पानी के अंदर मार करने वाले हथियार, दुश्मन के झांसा देने वाले और परीक्षण उपकरणों के निर्माण करती है।
- ☐ सेना की मांग के अनुसार पुरानी मिसाइलों का आधुनिकीकरण करने और उनकी जीवन अवधि बढ़ाने का भी काम किया जाता है ताकि उनकी क्वालिटी और महत्व को बढ़ाया जा सके।

- ❑ **हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड:** हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमि. (एचएसएल) की स्थापना मूल रूप से सेठ वालचंद हीराचंद द्वारा 1941 में स्वदेशी जलयानों के निर्माण उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए की गई थी।
- ❑ इस शिपयार्ड को 2010 में रक्षा मंत्रालय में स्थानांतरित कर दिया गया।
- ❑ इस शिपयार्ड का बुनियादी ढांचा बहुत अच्छा है और पूर्वी समुद्री तट पर यह अग्रणी शिपयार्ड बनने की क्षमता रखता है।
- ❑ एचएसएल में कई प्रकार के जलपोतों का निर्माण किया जाता है जिनमें गश्ती लगाने वाली नौकाएं और पनडुब्बियों की मरम्मत आदि शामिल हैं।
- ❑ अपनी स्थापना के बाद से यहां 179 जहाजों का निर्माण हो चुका है।
- ❑ एचएसएल देश के पूर्वी तट पर स्थित है और यह जलपोतों का निर्माण और पनडुब्बियों की मरम्मत करने वाली देश की प्रतिष्ठित कंपनी है।
- ❑ **मिश्र धातु निगम लिमिटेड:** मिश्र धातु निगम लिमि. की स्थापना 1970 के दशक की शुरुआत में की गई थी जिसका उद्देश्य शुरू में भारत के रक्षा उद्योग के सामरिक क्षेत्र में जरूरी महत्वपूर्ण सामग्री का निर्माण करना था।
- ❑ **डायरेक्टरेट जनरल ऑफ क्वालिटी एश्युरेंस:** डायरेक्टरेट जनरल ऑफ क्वालिटी एश्युरेंस (डीजीक्यूए) सेना, नौसेना (युद्ध सामग्री को छोड़कर) और वायुसेना के लिए आयुध कारखानों, सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों एवं निजी क्षेत्र से मंगाई गई।
- ❑ सामान्य वस्तुओं, रक्षा स्टोर्स और उपकरणों, चाहे वे स्वदेशी हों या आयातित, की गुणवत्ता का आश्वासन दिलाया है।
- ❑ यह देश की रक्षा तैयारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- ❑ डीजीक्यूए हथियारों को सेना में शामिल किए जाने से पहले उनका विस्तृत रूप से तकनीकी मूल्यांकन करता है।
- ❑ जीडीक्यूए की भूमिका में एक बड़ा बदलाव आ गया है और अब वह क्वालिटी ऑडिट की जगह क्वालिटी प्रबंधन और निर्माण की प्रक्रिया का ऑडिट करता है क्योंकि नियंत्रित सिस्टम से स्वयं ही उत्पाद की क्वालिटी अच्छी होगी।
- ❑ **डायरेक्टरेट जनरल ऑफ एयरोनॉटिकल क्वालिटी एश्युरेंस:** डायरेक्टरेट जनरल ऑफ एयरोनॉटिकल क्वालिटी एश्युरेंस (डीजीएक्यूए) वायुसेना, थलसेना, नौसेना और भारतीय कोस्ट गार्ड के सैन्य उड्डयन स्टोर्स के क्वालिटी एश्युरेंस (क्यूए) की नियामक अथॉरिटी है।

## रक्षा उत्पादन

- देश की रक्षा के लिए सशस्त्र बलों के लिए आवश्यक हथियारों, उपकरणों, प्लेटफॉर्मों और उपस्करों के उत्पादन के लिए औद्योगिक आधार को विकसित करने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1962 में रक्षा उत्पादन विभाग की स्थापना की गई थी।
- गत वर्षों में इस विभाग ने आयुध निर्माणियों और रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों के माध्यम से विभिन्न रक्षा उपकरणों के लिए व्यापक उत्पादन सुविधाएँ स्थापित की हैं।
- विनिर्मित उत्पादों के हथियार एवं गोला-बारूद, टैंक, बख्तरबंद वाहन, भारी वाहन, लड़ाकू विमान एवं हेलिकॉप्टर, युद्ध पोत, पनडुब्बियाँ, प्रक्षेपास्त्र, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, अर्थ मूविंग इक्विपमेंट, विशेष मिश्र धातुएं और विशेष प्रयोजन वाले इस्पात शामिल हैं।

## भारत में अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियां

- ❑ भारतीय रक्षा उद्योग को अपनी क्षमताओं के प्रदर्शन का एक मंच उपलब्ध कराने के लिए रक्षा प्रदर्शनी संगठन (डीईओ) एयरो इंडिया और डिफेक्सपो इंडिया नाम से द्विवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनिया आयोजित करता है।
- ❑ एयरो इंडिया जहाँ विमान और उड्डयन उद्योग से संबंधित होता है, वहीं डिफेक्सपो इंडिया में थल एवं नौसेना के रक्षा उपकरणों की प्रदर्शनी की जाती है।

## विदेशों में अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियां

- ❑ भारतीय रक्षा उद्योग के उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से डीईओ बड़े अंतर्राष्ट्रीय रक्षा प्रदर्शनियों में, इंडिया पैवेलिन, का आयोजन करता है ताकि भारत में निर्मित रक्षा उत्पादों के लिए बाजार विकसित किया जा सके।

## नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च ऐंड डेवलपमेंट इन डिफेंस शिपबिल्डिंग

- ❑ नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च ऐंड डेवलपमेंट इन डिफेंस शिपबिल्डिंग (एनआईआरडीईएसएच) की स्थापना केरल के कोझीकोड में की गई है जिसका उद्देश्य रक्षा विभाग के लिए जलपोतों के निर्माण में आत्मनिर्भरता हासिल करना है।
- ❑ इस संस्थान को भारत के भावी जलपोत निर्माण कार्यक्रम के लिए उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में देखा गया है।
- ❑ एनआईआरडीईएसएच के मुख्य कार्यों में अनुसंधान और विकास, जलपोतों का डिजाइन, प्रौद्योगिकी का विकास और प्रशिक्षण शामिल है।

### अनुसंधान और विकास

- रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) रक्षा मंत्रालय की अनुसंधान एवं विकास शाखा है। इसका गठन 1958 में किया गया था।
- वैज्ञानिक समस्याओं पर रक्षा सेवा को सलाह और सहायता तथा रक्षा क्षेत्र में अनुसंधान हेतु 1948 में गठित रक्षा विज्ञान संगठन और तीनों सेनाओं के तकनीकी विकास स्थापना का विलय कर ही डीआरडीओ की स्थापना की गई।
- प्रशासनिक क्षमता में सुधार के लिए वर्ष 1980 में एक अलग रक्षा अनुसंधान और विकास विभाग का गठन किया गया।
- वर्ष 1958 में दस प्रयोगशालाओं के साथ काम शुरू करने वाले डीआरडीओ के पास आज 46 प्रयोगशालाएं हैं।
- ये प्रयोगशालाएं पूर्व में तेजपुर से पश्चिम में मुंबई तक और उत्तर में लेह से दक्षिण में कोच्चि तक फैली हैं।
- यह रक्षा सेनाओं के लिए उन्नत सेंसर, हथियार प्रणाली प्लेटफॉर्म तथा सहयोगी उपकरण के उत्पादन से जुड़ी प्रौद्योगिकी और अनुसंधान का विकास करता है।

### मानव संसाधन

- उद्देश्यपूर्ण संस्था होने के नाते डीआरडीओ मानवशक्ति नियोजन की गतिशील प्रणाली का पालन करता है।
- प्रयोगशालाओं के कार्यभार और नई परियोजना शुरू करने के कारण तात्कालिक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक दूसरे वर्ष प्राधिकरण की समीक्षा की जारी है।
- गतिशील मानवशक्ति प्रबंधन पद्धति के द्वारा यह संगठन मानवशक्ति का बेहतर इस्तेमाल करता है।
- डीआरडीओ में कर्मियों की कुल संख्या 25,966 है। इनमें से 7,574 रक्षा अनुसंधान तथा विकास सेवा (डीआरडीएस) में, 9,643 रक्षा अनुसंधान तकनीकी संवर्ग (डीआरटीसी) में तथा 8,775 प्रशासन एवं अन्य सहयोगी संवर्ग में है।
- डीआरडीओ प्रशिक्षण संस्थानों के द्वारा अपने सभी संवर्गों के कर्मिकों का प्रशिक्षण सुनिश्चित करता है।
- ये प्रशिक्षण संस्थान हैं-डीआईएटी, पुणे (तकनीकी पाठ्यक्रमों के लिए), आईटीएम, मसूरी तकनीकी-प्रबंधकीय कार्यक्रमों के लिए और रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर (तकनीकी, प्रशासनिक तथा संबद्ध संवर्ग के लिए)।
- प्रायोजित कार्यक्रम के तहत प्रत्येक वर्ष चुने हुए वैज्ञानिकों को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) और अन्य प्रतिष्ठित भारतीय विश्वविद्यालय में एमई/एमटेक/पी.एचडी करने के लिए भेजा जाता है।

- डॉ. राजा रमन्ना कॉम्प्लेक्स, बंगलुरु में डीआरडीओ के वैज्ञानिकों हेतु लक्षित प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की गई है।

#### भूतपूर्व सैनिकों का पुनर्वास

- ❑ भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग देश में भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण और पुनर्वास के लिए अनेक नीतियां और कार्यक्रम चलाता है।
- ❑ विभाग में पुनर्वास और पेंशन दी डिविजन हैं और इसके तीन संबद्ध कार्यालय हैं-केंद्रीय सैनिक बोर्ड (केएसबी), महानिदेशालय (पुनर्वास) सीओ और केंद्रीय संगठन भूतपूर्व सैनिक अनुदायित स्वास्थ्य योजना (डीजीआरईसीएचएस) है।

#### केंद्रीय सैनिक बोर्ड, सचिवालय

- ❑ केंद्रीय सैनिक बोर्ड (केएसबी) सचिवालय भारत सरकार का एक शीर्ष निकाय है जो शहीदों की विधवाओं/युद्ध में विकलांग हुए सैनिकों, ईएसएम और उनके आश्रितों के कल्याण के लिए सरकार की नीतियों को कार्यान्वित करने के लिए जिम्मेदार है।
- ❑ इसके कार्य में 32 राज्य सैनिक बोर्ड और 392 जिला सैनिक बोर्ड सहायता करते हैं।
- ❑ सशस्त्र सेना झंडा दिवस निधि (एएफएफडीएफ) शहीदों की जरूरतमंद विधवाओं/विकलांगों, ईएसएम और उनके आश्रितों को वित्तीय सहायता प्रदान करने का प्रमुख स्रोत है।

#### रक्षा पेंशन

- ❑ तकरीबन 30 लाख रक्षा पेंशनभोगियों/परिवार के पेंशनभोगियों को पूरे भारतवर्ष में फैले 20 सरकारी बैंकों, 4 निजी बैंकों-एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, एक्सिस बैंक और आईडीबीआई बैंक, 640 कोषागारों, 64 रक्षा पेंशन वितरण कार्यालयों (डीपीडीओ), 2 डाकघरों, 5 वेतन एवं लेखा कार्यालयों (पीएओ) के माध्यम से वितरित की जाती हैं।
- ❑ नेपाल में रह रहे सशस्त्र बलों के पेंशनभोगियों के लिए पेंशन का वितरण 3 पेंशन भुगतान कार्यालयों (पीपीओ) के माध्यम से किया जाता है।

□□□



## परीक्षा उपयोगी प्रश्न

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. भारत की सीमा रेखा कुल 6 देशों से मिलती है।
  2. भारत म्याँमार के साथ कोई सीमा नहीं बनाता है।
- उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं-

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 व 2 दोनों
- (d) न तो 1 न ही 2

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. रक्षा मंत्रालय का प्रमुख कार्य रक्षा और सुरक्षा संबंधी सभी मामलों पर सरकार से निर्देश प्राप्त करके उन्हें रक्षा मुख्यालयों, प्रतिष्ठानों व रक्षा अनुसंधान संगठनों तक कार्यान्वयन के लिए उन्हें पहुँचाना है।
2. रक्षाकर्मी कल्याण विभाग गृह मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं-

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 व 2 दोनों
- (d) न तो 1 न ही 2

3. 10 डिग्री चैनल कहाँ स्थित है?

- (a) लिटिल अंडमान और निकोबार के मध्य
- (b) डोवर और कैलाइस के मध्य
- (c) अलास्का और रूस के मध्य
- (d) इनमें से कोई नहीं

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. सी.पी.ई.सी सिल्क रोड इकोनॉमिक बेल्ट और 21वें मेरी. टाइम सिल्क रोड प्रोजेक्ट का हिस्सा है।
2. सीपीईसी. का एक हिस्सा बलूचिस्तान से गुजरेगा जिस पर भारत ने आपत्तियाँ दर्ज की हैं।
3. चीन सी.पी.ई.सी के जरिए फारस की खाड़ी तक अपनी तीव्र पहुँच बनाना चाहता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं-

- (a) 1 व 2
- (b) 2 व 3
- (c) 1 व 3
- (d) 1, 2 व 3

5. निम्नलिखित में से कौन सा भारत का पहला विमान वाहक पोत है?

- (a) INS विक्रान्त
- (b) INS विराट
- (c) INS कलावरी
- (d) INS अरिहंत

6. हाल ही में समाचारों में रहा 'स्वाति' क्या है-

- (a) बालिका शिक्षा पर सरकार द्वारा जारी एक पोर्टल
- (b) रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा निर्मित राडार
- (c) एक गैर सरकारी संगठन जो कैलाश सत्यार्थी के 100 मिलियन फॉर 100 मिलियन योजना में सहायता दे रहा है।
- (d) इनमें से कोई नहीं।

---

Answer Key:-

1. (d)

2. (a)

3.(a)

4.(d)

5.(a)

6. (b)